भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित अनुसंधान निष्कर्षों के विस्तार हेतु नेटवर्क के सशक्तिकरण विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला

(दि. 06-07 नवम्बर, 2015)

निदेशक उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान के निर्देश पर उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के अंतर्गत अन्य संस्थानों द्वारा विकसित अनुसंधान निष्कर्षों के विस्तार हेतु नेटवर्क के सशक्तिकरण हेतु दो दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला दिनाँक 06-07 नवम्बर, 2015 को वन विज्ञान केंद्र. ओड़िसा, कोरापुट में आयोजित की गई। इसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न जिलों के कृषक, गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, स्वःसहायता समूह के सदस्य तथा वन विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे।

डॉ नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक-जी नें सागौन के वृक्षारोपण में कीटों का जैविक नियंत्रण एवं वन रोपणियों में श्वेत इल्ली के समन्वित प्रबंधन के बारे में जानकारियाँ उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दी। श्रीमति नीलू सिंह, वैज्ञानिक – ई नें लघु वनोंपजों को सुखाने की ड्रम ड्रायर तकनीक तथा कालमेघ, सर्पगंधा, अश्वगंधा आदि औषधीय पौधों की कृषि तकनीक के बारे में जानकारी उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दी। डॉ. ननीता बेरी वैज्ञानिक –ई नें संस्थान द्वारा विकसित कृषि वानिकी को अपनाकर सीमित भूमि से अधिक लाभ प्राप्त हेतु जानकारी से प्रशिक्षार्थियों को अवगत् कराया। डॉ. ए.के. भौमिक, वैज्ञानिक –सी नें खदानों से निकली मिट्टी, लैटेरिटिक मृदा, भाटा एवं परती भूमि, कंकालित मृदा तथा ताप बिजली गृहो द्वारा उत्सर्जित फ्लाई ऐश के जैविक सुधार पर प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. आर.के. वर्मा, वैज्ञानिक – एफ द्वारा आँवला रोपणी एंव सागौन के बीजोत्पादन क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कीट और उन पर लगने वाले रोगों के निदान एवं उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी प्रदान की। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने चर्चा में योगदान दिया।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन श्री पाठक, मुख्य वन संरक्षक, केंदु पत्ता के मुख्य आतिथ्य एवं श्री मोलाथ मोहन, मुख्य वन संरक्षक, कोरापुट की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उन्होंनें इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम को ओडिसा राज्य के प्रत्येक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त में आयोजित करनें की अनुशंसा की। कार्यक्रम के आयोजन में श्री अर्थनारी, नोडल अधिकारी एवं वन मंडलाधिकारी कोरापुट का सराहनीय योगदान रहा। प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपने विचार तथा अपने फीड़-बैक (Feed back) प्रस्तुत किये। सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम के समापन पर धन्यवाद ज्ञापन डॉ नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक-जी तथा समन्वयक प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रस्तुत किया।

Source: Extension Division

Source: Extension Division

Source: Extension Division